Indian Streams Research Journal
International Recognized Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2230-7850 Impact Factor : 3.1560 (UIF) Volume - 6 | Issue - 1 | Feb - 2016

स्वातंत्र्योत्तर चुनाव प्रणाली एवं नेताओं के वायदे (कमलेश्वर के उपन्यासों के आधारपर)

अनुप सहदेव दळवी
प्राध्यापक,रा.ब.□ाराय□राव बोराव□ महाविद्यालय,
श्रीरामपूर, जि.अहमदनगर.

प्रस्तावना :-

भारत दुनियाँ का सबसे बड़ा लोकशाही प्रदान देश है। इसलिए लोकशाही में चुनावों का महत्वपूर्ण स्थान है। चुनाव प्र□ाली □ द्वारा ही लोकतंत्र को जीवित रखा जाता है। भारतीय जनता स्वतंत्रता प्राप्ति से अपने प्रतिनिधि तथा अपनी सरकार चुनने की परम्परा का निर्वाह कर रही है। पंजीकृत मतदाताओं को अपने पसंद के प्रतिनिधि को मत देने का अधिकार भारतीय संविधान के द्वारा प्राप्त है। भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व.राजीव गांधी के पूर्व इक्कीस साल की आयु में मतदान करने का अधिकार था। परतुं उन्होंने अठारह साल की आयु में मतदान का अधिकार दिलाकर लोकशाही प्रणाली में जनता का सहभाग बढ़ाया है। इसलिए अठारह साल के युवकों के अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार प्राप्त हुआ है

सभी भारतीयों की मूलभूत आवश्यकताओं का पूर्ति हो जायें। विश्वशान्ति फैल जाये। समता-बन्धुता की भावना फैल जायें। सर्वधर्मसमभाव का व्यवहार हो जायें। परतुं दुख की बात है कि चूने गये राजनेता चुनाव के बाद अपने सभीं कसमे-वायदे भूलकर पूँजी इकठ्ठी करने के लिए जुट जाते हैं। हर पाँच वर्षों के बाद-चुनाव होते हैं। परतुं नेताओं के स्वार्थसिध्दि के कारण सरकार की अनेक योजनाएँ सामान्य लोगों तक न पहुँचकर केवल कागज पर ही होती है। परिणामत: आज देश अनेक समस्याओं से घिर गया है। आज मुख्यत: अनाज की समस्या, जनसंख्या की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, सुरक्षा की समस्या, न जाने कितनी समस्याओं से आज भारतीय आम आदमी ग्रस्त है। इसलिए आजकल जनतंत्र का स्वरूप अत्यन्त विकृत एवं जर्जर होता जा रहा है। एक ओर देशव्यापी भ्रष्टाचार, व्यक्तिगत स्वार्थ, स्वार्थलिप्सा और दूसरी ओर गरीबी, निराशा एवं उसकी मजबूरियाँ जनतंत्र की नींव को हिला रही हैं। राजनीति के क्षेत्र में होनेवाले भ्रष्टाचारों से जनतंत्र खोकला हो रहा है। इस तथ्य को उद्घाट़ित करते हुए डॉ. अरूणेन्द्रसिंह राठौर ने लि□ा है-" जनतंत्र में चुनाव का बड़ा महत्व है। परतुं चुनावी प्रक्रिया आज दूषित एवं षडयंत्र पूर्ण हो गई है। आज लोकसभा से ले□र □ामसभा तक चुनाव जातिवाद एवं धर्मवाद के आधार पर लड़े जा रहे हैं। प्रत्याशी और व्यवस्था □ी मिली-भगत तथा लाठियों के जोर पर फर्जी मतदान एवं 'बूथ कैचरिंग ' किए जा रहे हैं। चुनाव से पहले व्यापारियों एवं पूँजीपतियों से अंदरूनी साँठ-गाँठ करके 'पार्टी चंदा' के नाम पर मोटी रकम वसूल की जाती है। परिणाम स्वरूप चुनावोपरांत सरकार एवं व्यवस्था पर पूँजीपतियों का अधिपत्य हो जाता है और बाजार उन्हीं के इशारे पर नाचने लगते हैं। महंगाई का ग्राफ बढ़ जाता है और गरीब, निम्न एवं मध्यवर्ग बढ़ती कीमतों की चक्की में पिसते रहते हैं।"[१] आज षडयंत्र एवं कुटिल राजनीति के परिणाम स्वरूप राजनीति नैतिकता विहिन हो गई हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति से राजनेताओं ने देश की जनता से झूठे वायदों तथा प्रलोभनों ने गुमराह बनाया है। जनता नेताओं के झूठे वायदें से ठग रही हैं। इस तथ्य को उद्घाटित करते हुए कमलेश्वर ने 'काली आँधी' राजनीति के विद्रुप चेहरे को उजागर करने के उद्देश्य से भी लिखी गयी थी। भारतीय राजनीति में अवरवादिता बढ़ने, गरीबी और भूख मिट़ाने की खोखली मुहिम चलाने और खासतौर पर भ्रष्टाचार पनपने का यहीं दौर रहा है। वोट के वक्त जिस प्र□ार के वादे किये जाते हैं और उसके परिणाम वास्तविक तौर पर क्या होते हैं- "काली आँधी' में यह भी एक प्रमुख मुद्दा है।"[२] सामान्य जनता विश्वास से राजनेताओं के हाथ सत्ता सौंप देती है, परतुं वह उनकी भावनाओं के साथ विश्वासघात करता है। जनता के विश्वास एवं अधिकारों का तनिक भी उन्हें ध्यान नहीं आता। इसलिए आजकल देश की स्थिति तथा जनतंत्र की हालत इतनी दूषित हो गई है कि जिसके पास सत्ता और धन हैं, वहीं सत्ता हासिल करता है। सत्ता के द्वारा किये जानेवाले अन्याय, अत्याचार तथा शोषण के विरूध्द आवाज उठानेवालें की जुबान खींचने की प्रणाली राजनीति में होती है।

इसलिए चुनाव के समय लोगों □ सामने हाथ जोड़कर विनम्रता से वोट माँगनेवाला नेता चुनाव के बाद गुंडों की फौज खड़ी कर राजनीति के फैसले करता है। लोंगो की समस्याएँ हल करने की कसम खाकर राजनीति में सक्रिय होनेवाला नेता लोगों की ही समस्याओं का कारण बन जाता है। राजनीति में जाति के हिसाब से चुनाव क्षेत्र तथा चुनाव के पैतरें तैयार किये जाते हैं। राजनेता जनता में अपनी समाजसुधारक की छबी का आभास निर्माण करने में सफल हो जाता है। विरोधी नेताओं के दोषपूर्ण नीतियों का पर्दाफाश कर अपनी अलगता सिध्द करने का प्रयास करती हुई 'काली आँधी' उपन्यास की नायिका मालती कहती है- "हमें विरोधी -नेताओं के हथकड़ें नहीं अपनाने हैं। चुनाव एक पवित्र कार्यक्रम है। हम जनता के पास अपना असली कार्यक्रम लेकर जाएंगे और जनता की समझ पर ही निर्भर करेंगे। पैंतरेबाजी और उठा-पटक का सवाल -नहीं है। हम जातियों के आधार पर भी चुनाव नहीं लड़ेगें क्योंकि हमारी नीति किसी खास जाति के लिए नहीं हैं, पूरी जनता के लिए है।"[३] नेतागण अपने वक्तृत्व कौशल एवं राजनीतिक पैतरों से कार्यकर्ताओं और जनता की प्रशंसा को प्राप्त करते हैं। नेताओं के दम्भिक षडयंत्रों, पैतरेबाजी एवं हथंकडों का दस्तावेज कमलेश्वर द्वारा लिखित 'काली आँधी' उपन्यास है। चुनावी राजनीति के कारण सामूहिक जीवन की भाव-ना खण्डित हुई हैं। राष्ट्रप्रेम एवं एकता की भावना में दरारें उत्पन्न हुई हैं। विविध राजनीतिक पार्टियों के परिणाम स्वरूप लोगों का जाति-सम्प्रदायों में बँटवारा हो गया है। चुनावी राजनीति के फलस्वरूप ही कटुता, विषमता और बिखराव उत्पन्न हो गया है। आत्मकेंद्रित राजनीति के कारण अमानवीयता की स्थिति उग्र रूप ले रही हैं। विपक्षी दलों के उम्मीदवारों तथा कार्यकर्ताओं की चुनावी नीति को देखकर 'काली आँधी' उपन्यास की नायिका मालती अपने राजनीतिक पैतरों को प्रस्तुत करती हुई कहती है- "हम जातिवाद के सहारे चुनाव नहीं लडेंगे यह बात साफ हैं। पर सच्चाई को भी देखिए। चुनाव मैदान में इत्तफाक से बनियों का कोई अपना कैंडीडेट नहीं हैं। लाला दीनानाथ के खड़े होते ही सारे बनिये उनके इर्द-गिर्द जमा हो जाएंगे... यह शर्तिया होगा क्योंकि लोगों के मन में अपनी जाति के लिए लगाव होना लाज़िमी है। लाला दीनानाथ के खड़े होते ही सब बनिये एकजूट हो जाएंगे और समर्थन करेंगे।"[४] गुरूसरन जी द्वारा मालती के चुनावी नीति पर सन्देह व्यक्त करने पर वह अपनी चुनावी नीति की रणनीति को प्रस्तुत करती है- "जब सारे बनिये लाला दीनानाथ के झण्डे के नीचे जमा हो जाएंगे, उस वक्त लाला दीनानाथ चुनाव मेरे फेवर में विड्रा करेंगे। समझे आप। तब एक भी बनिया कही टूटकर नहीं जा सकता...।"[५] मालती भी चालाक राजनेताओं की तरह जाति भेद न करने का बनाव करती है। वह अपने लोगों को समझाती है कि, जनता के बीच काम करनेवाले की कोई जाति नहीं होती हैं। ताकि जनता जातिवादी होने का आरोप न कर सकें। राजनीति की सफलता भी यहीं है कि आपका पहलू ईमानदारी से भरा और सही माना जाए। ताकी भोली-भाली जनता उस पर विश्वास कर सकें। हर नेता अपने पैतरेंबाजी से लोगों को उल्लू बनाकर अपना विश्वास जनता में निर्माण करने में कामयाब हो जाता है। इसीलिए वर्तमान चुनावी राजनीति लक्ष्यभ्रष्ट एवं दिशाहीन होती हुई दिखाई देती है। लोकतंत्रीय शासन प्रणाली में जनता के अधिकारों का सबसे अधिक दुरूपयोग चुनाव के अवसर पर ही होता है। सत्ताधारी पक्ष चुनाव जीतने के लिए विभिन्न हथकंडें अपनाता है। वह अपने खोखले नारों से जनता को प्रभावित करता है तथा अपनी शक्ति के बल पर लोगों के मत हस्तगत करता है। जनता नेताओं के झूठे वायदे सुनकर गुमराह होती है। वह हमेशा जनता को जाति-पाँति हिन्दू-मुसलमा-न, सि□-ईसाई के नाम पर विभाजित कर अपनी स्वार्थ सिध्दि का प्रयास करता है। आज राजनेताओं के सामने देशहित, एवं मानवहित का कोई मूल्य नहीं है। सत्ता हासिल हो जाने पर राजनेता अपने आश्वासनों को भूल जाता है। नेताओं के द्वारा विरोधी दल के राजनेताओं के प्रति जनता को भड़काने की चुनावी नीति है। परतुं विरोधी दलों के पैतरों के अनुरूप उनके आरोपों का खंडन भी अपने राजनीतिक हथकंड़ों से करता हुँ। जनता के मन को जीतने में सफल हो जाता है। इसी राजनीतिक दाँव-पेच के अनुसार 'काली आँधी' उपन्यास का पात्र गुरूसरनजी राशन इकठ्ठा करने के कारण विरोधी दल के उम्मीदवार चन्द्रसेन ने भेजे मोर्चा को शान्त करते हुए भाषण देता है- "भाइयों ! भूख और गरीबी ... यह एक दिन का सवाल नहीं है। हमें ये सवाल हमेशा के लिए सुलझा-ना है... और यहीं वजह है कि हमारी पार्टी और हमारी पार्टी उम्मीदवार मालती जी इस चुनाव के मैदान में उतरी है ताकि भूख और गरीबी को हमेशा-हमेशा के लिए नेस्तनाबूद किया जा सके... इसलिए भाइयों, आप इन टटपूंजिये और मौके का फायदा उठाकर आपको इस्तेमाल कर लेनेवाले इन दगाबाज छुटभइयों के बहकावे में आइए और चुनावों के इस पवित्र कार्यक्रम को पूरा होने दीजिए।"[६] राजनीतिक कुटिल षडयंत्रों के कारण जनजीवन में संघर्ष निर्माण किया है। एक दल-दूसरे दल कूटनीति, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, विश्वासघात आदि वृत्तियों का पर्दाफाश जनता में सभ्रम निर्माण करते हैं। वास्तव में एक-दूसरे पर आरोप करनेवाले दल स्वार्थी एवं भ्रष्टाचारी वृत्ति के ही है। परतुं जनता के बीच स्वयं को बेदा□ पेश करने की नीति, जनता में भूल भूलैय्या निर्माण करती है। जनता उनके दाँव-पेच तथा भूलभूलैय्या से भ्रम में पड़ती है। इन धोखेबाज, दंगाबाज, क्रूर, विश्वास घातकी राजनेताओं की जालसाजी सामान्य मनुष्य की समझ □ा बाहर की होती है। समाज में जनता के सेवक होने का आभास पैदाकर उन्हें ठगने का काम राजनेता चतुराई से करता है।

सत्ता प्राप्ति के बाद राजनेता अपने समाज की सेवा करने के वायदें को भूलकर शोषण □रने में अपनी शक्ति जुटाता है। वह सत्ता, पद और प्रतिष्ठा को भ्रष्टाचार तथा गुंडागर्दी का परवाना मानता है। अपने सत्ता केंद्र को चरागाह मानता है। उस चरागाह को रौंधता वह अपना धर्म-कर्म मानता है। स्वयं को जनता के सेवक कहनेवाले नेता भ्रष्टाचार कर जनता का खून चुसने लगते हैं। इसलिए वर्तमान राजनेताओं के सम्बन्ध में 'रक्षक ही भक्षक' बनने की कहावत चरितार्थ होती हैं। लोगों की भावनाओं □ा लाभ उठ़ाने की कोई कसर राजनेताओं के द्वारा छोड़ी जाती है। सामान्य जनता की भावनाओं एवं मानसिकता का लाभ उठ़ाने हेतु 'काली आँधी' उपन्यास का पात्र लल्लुलाल अपने कार्यकर्ताओं को राजनीति के दाँव-पेचों के पाठ पढ़ाता है- "तो एक रामायणी पण्डितजी को पकड़िए। गाँव के किसी असरदार आदमी के घर रामायण का पाठ रखवाइए और उसी बहाने अपना काम कीजिए। शहर के लिए एक-एक मोहल्ले में एक-एक दिन नौटंकी और कव्वाली का प्रोग्राम आर्गनाइज कीजिए ऐसे चुनाव नहीं लड़े जाते, जैसे आप लड़ रहे हैं।"[७] सत्ता की नशा राजनेताओं को मदहोश बना देती है। राजनीति के बिना वह अपना जीवन व्यतीत नहीं कर सकते। हर समय अपनी राजनीतिक पैंतरेबाजी तथा नये दाँव-पेच की नीतियाँ निश्चित कर अपनी कुटनीति से

मार्गक्रमण करते हैं। राजनीति की सफलता की नशा में वह दौड़ता रहता है। इस दौड़ में वह भूल जाता है कि, उसने दौड़ना क्यों और कहाँ से शुरू किया। इसी दौड़ में जनकल्याण की भावना को वह भूल जाता है। इसीलिए कहता पड़ता है राजनीति राजनेताओं के लिए स्वार्थसिध्दि का साधन मात्र है- "राजनीति में जो सबसे बड़ा छल है वह यही है कि दौड़नेवाला हमेशा कहता है- हम तुम्हारे लिए दौड़ रहे हैं। जब कि सही यह होता है कि खुद वह अपने लिए भी दौड नहीं रहा होता ... कुछ इसी तरह की दौड़ मालतीजी की रही है। और इस दौड़ का नुकसान भुगतना है वह दौर जो सफलता की इस राजनीति की चपेट में आ जाता है।"[८] राजनेता अपने स्वार्थसिध्दि के लिए समाज में अलगाव की भावना निर्मा करता है। वह कभी धर्म, कभी सम्प्रदाय, कभी भाषा, कभी क्षेत्र तो कभी वर्ण तथा वर्ग में लोगों की विभाजित करता है। इसके परिणाम स्वरूप ग्रामीण जनजीवन की सामूहिक तथा एकता की भावना खण्डित हो रही है। परतुं धीरे-धीरे राजनीतिक चाल-चलनों से ग्राम जीवन के लोग परिचित हो रहे हैं। ग्रामीण जीवन की बदली नीति को प्रस्तुत करते हुए मालती के एक कार्यकर्ता कहते हैं- "अब गाँवों में हाल बहुत बदल या है। छोटी-छोटी पार्टियों और गैर जिम्मेदार नेताओं ने माहौल बिगाड़ दिया है। इन्हीं लोगों की वजह से अब वाले सी पर य न -नहीं करते।"[९] राजनेता अपनेपण का आभास लोगों में निर्माण कर उनके हृदय में स्थान प्राप्त करता है। लोग भी राजनेताओं को अपना मानते हैं। 'काली आँधी' उपन्यास की नायिका मालती भी अपने भाषणों से लोगों में आत्मीयभाव जागृत करती है- "हम आपके हैं। और आप सब हमारे। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि आपकी परेशानियाँ हम खत्म करेंगे... लेकिन यह तभी हो सकता है जब आप इसी तरह हमेशा हमारा साथ दें जैसे आज दिया है।"[१०] राजनेता उद्भूत परिस्थितियों का लाभ उठाकर अपने दाँव-पेचों का इस्तेमाल करना अच्छी तरह से जानता है। वह हर घटनाओं एवं प्रसंगों से लोगों के हृदय में अपने लिए जगह बनाकर अनुकम्पा निर्माण करने में सफल हो जाता है। विरोधी नेताओं के द्वारा मालती पर हमला करने की साजिश की जाती है। परिणामत: लोगों में उसकी इज्जत और बढ़ जाती है। जान बूझकर मालती को चोट पहुँचाने का जो बहाना किया गया, उसका पर्दाफाश रते हुए गुरूसरनजी कहते हैं-" यों मालतीजी के माथे पर लगी चोट ठीक हो चुकी थी, पर मैंने देखा, उसी जगह पर खासा बड़ा फाहा लगाकर प्लास्टर-पट्टियों से चिपकाया गया था, कुछ इतना बड़ा कि काफी दूर से भी दिखाई दे।"[११] आज राजनेताओं के मन में जनता के प्रति कोई हमदर्दी का लवलेश दृष्टिगत नही होता है। केवल 'वोट' प्राप्ति का साधन माना जाता है। इसलिए वह लो से भी लुभा र, भी प्रलोभन दिखाकर, कभी डरा-धमकाकर, कभी गुंडों की फौज खड़ी कर तो कभी बूथ पर कब्जा कर राजनीति में सफलता हासिल करता है। इसीलिए वोटों की राजनीति सिर्फ चूनावों तक सीमित होती है। परिणामत: अपनी इच्छा के अनुरूप मतदान न कर सकने से लोगों में तनाव एवं संघर्ष निर्माण होना स्वाभाविक है। इस सम्बन्ध में डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले के विचार समर्थनीय है- "हमारे अपने गणतंत्रीय राष्ट्र में भी आम आदमी इच्छानुरूप मतदान नहीं कर पाता बल्कि वोट देने की स्वतंत्रता का अभाव आने पर वे भी संघर्ष करते हैं।"[१२] वर्तमान राजनीति में अस्थिरता दृष्टिगत होती है। सत्ता प्राप्ति के लिए जो गठबंधन किये जा रहे हैं वे स्वार्थ से प्रेरित हैं। आज चुनाव में उचित-अनुचित सभी हथकडों का खुलकर प्रयोग किया जा रहा है। राजनेताओं के द्वारा जनता ही नहीं राजनीतिक पार्टियाँ भी खरीदी जाती है। इसलिए आज केवल पूँजीपति ही राजनीति में खड़ा हो सकता है, जिसके पास वोटों को खरीदने की आर्थिक क्षमता हों।

समग्रत: का जा सकता है, वर्तमान राजनेता समाजवाद का केवल आभास निर्माण करता है। उसका समाजवाद का अर्थ 'सेवा के बदले मेवा' है। राजनीतिक पाटियों के गठबंधन से टिकट खरीदने से लेकर मतदाताओं के मत खरीदने या चाहे जिस मार्ग से मत हथियाने के लिए पैसों की आवश्यकता होती है। परिणामत: आज चुनाव इतने महंगे हो गए हैं कि सामान्य व्यक्ति राजनीति का विचार भी नहीं कर सकता। वर्तमान राजनीति ने व्यापार का रूप धारण करने के कारण प्रतिष्ठित परिवार परम्परा से राजनीति में सक्रिय हैं। वर्तमान चुनाव प्रणाली में हर प्रत्याशी लाखों रुपया खर्च कर मतदाताओं को अलग-अलग प्रलोभनों, हथकंडों, षडयंत्रों, कुटिलता, अनैतिकता से अपने मायाजाल में किस तरह फँसाकर राजनीति में सफलता हासिल करता है, उसका यथार्थ चित्रण कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों से प्रस्तुत कर राजनीतिक अपराधीकरण को रोकने के प्रयासों को उद्धृत किया है।

संदर्भ संकेत

१) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी लघु उपन्यासों में युगचेतना-डॉ.अरुणेन्द्रसिंह राठौर- पृ-२४०-२४१.
२) समग्र उपन्यास (काली आँधी)- मलेश्वर- भूमि ा से
३) वही -पृ-३७३.
४) वही -पृ-३७५.
५) वही -पृ-३७५.
६) वहीं-पृ-३७७.
७) वही -पृ-३७७.
८) वही -पृ-३८५.
९) वही -पृ-३९१.
१०) वही -पृ-४०४.
११) वही -पृ-४१७.
१२) सत्तरोत्तर हिन्दी उपन्यासों के नायक- डॉ.भाऊसाहेब नवनाथ नवले- पृ-११२.